

शुद्धिमेवास्तेन कर्मभूतं मन्त्रं यथा
तद्व्याख्यं कर्म यथा मूलं मन्त्रं यथा
४४० कर्म तिलो ४४० मन्त्रं यथा
नाहि मन्त्रं यथा साधकं मन्त्रं यथा
कर्म मन्त्रं यथा साधकं मन्त्रं यथा

शुद्धिमेवास्तेन कर्मभूतं मन्त्रं यथा

मदधुवहूमा दोषधीययगानन॥५॥नेश्वरीः
येवगाम्बूलं वन्दनं कंक मन्त्रम्॥ नूननेवदिव
ननयुजयित्वा महीषधी ॥ ५॥ ॐ ह्रीं वज्ररुत
कामं साधकमुमहामनिः ४वी जानिगम्य श्री
यान् गृहीतानि व ॥ ५॥ धयन् ॥ ५॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं

नावीर्जगत्सारुलं समुद्धलन् नो लार्धयदियत्स
यिर्मधुवादनसंयुतं ॥ १॥ यत्र त्मद्विनायेव
मर्गदिगुणद्वियन् ॥ यत्र त्मद्विनायेव नैत
मन्तु कालं यन् ॥ ८॥ धृत्वे कविर्गनिदिनं निर्वो
गृहसंस्तिर्गं ॥ समुद्धलं सद्यकाय ४ यिवत्सुयादि

स्ति २

यपलं ॥८॥ नगानि सङ्गमायानि सर्वानि सङ्गका
रवन्तं यमगतं द्वितीयं नक्षत्रं पि को न वृष्टि क र्हा
ऊर्ध्व ॥१०॥ अथ नक्षत्राणि विवक्ष्यते यावत्सर्वं वक्ष्यते
यत् । वाक्छाद्यं ययना रूत्वा न नक्षत्रं लमायुया
न ॥११॥ रुवत्सूर्यो सभा रासा नस्मि हि ४ य न ये द्वि

र्ध्व । स रुवत्सूर्यो विवक्ष्यते निर्जन तत्त्व न वा द्वं न न ॥१२॥
॥ खलं नन्द स दृष्टं न न दिवा यन्धति गाल को । सु
यो ह्य गङ्गा मध्यां क्र स यन्धत्य नू र्ध्वं निर्व ॥१३॥ दू
नक्षत्रं यमवाक्छं विषं जी योति नक्षत्रं । रुवत्सूर्यो
स्य दर्शनं कृष्टं सर्वं लगति नाशं न ॥१४॥ मासस्य

[illegible]

धृदवि यथा धर्मः ॥ १० ॥ दुरु सिद्ध महाय द्वा ४ किः
 वना जगना दसा ४ या निग स्या वस हा व कर्ष निः
 या निमू लमं ॥ ११ ॥ दृष्ट ना प्र मये कृत्वा कि निम
 विनि ४ कि यन ॥ ३ ॥ त्स र्जी क्रिय ग नय सधमा सा
 त्का वन रु वग ॥ १२ ॥ व ३ ध स्या दमा स स्या ४ दू या

वृत्तियत्कृत् । सिद्धाद्गुणः ॥ १८ ॥ का उ न न द ॥ १९ ॥
स्यमानव ॥ २० ॥ य ॥ २१ ॥ त्मकारुवत्साहि ॥ २२ ॥
सवनावन ॥ २३ ॥ य ॥ २४ ॥ य ॥ २५ ॥ य ॥ २६ ॥ य ॥ २७ ॥
य ॥ २८ ॥ निद ॥ २९ ॥ ट ॥ ३० ॥ क ॥ ३१ ॥ न ॥ ३२ ॥ का ॥ ३३ ॥
न ॥ ३४ ॥ य ॥ ३५ ॥ मा ॥ ३६ ॥ स ॥ ३७ ॥ य ॥ ३८ ॥ य ॥ ३९ ॥

थ ॥ ४० ॥ २२ ॥ द ॥ ४१ ॥ सि ॥ ४२ ॥ द ॥ ४३ ॥ स ॥ ४४ ॥ य ॥ ४५ ॥ क ॥ ४६ ॥ क ॥ ४७ ॥ व ॥ ४८ ॥ क ॥ ४९ ॥
न ॥ ५० ॥ स ॥ ५१ ॥ स ॥ ५२ ॥ न ॥ ५३ ॥ क ॥ ५४ ॥ न ॥ ५५ ॥ न ॥ ५६ ॥ स ॥ ५७ ॥ य ॥ ५८ ॥ न ॥ ५९ ॥
थ ॥ ६० ॥ २३ ॥ य ॥ ६१ ॥ स ॥ ६२ ॥ न ॥ ६३ ॥ उ ॥ ६४ ॥ नि ॥ ६५ ॥ द ॥ ६६ ॥ न ॥ ६७ ॥ द ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ सि ॥ ७० ॥ दि ॥ ७१ ॥ रु ॥ ७२ ॥ व ॥ ७३ ॥ ग ॥ ७४ ॥
न ॥ ७५ ॥ थ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ क ॥ ७८ ॥ उ ॥ ७९ ॥ न ॥ ८० ॥ व ॥ ८१ ॥ स ॥ ८२ ॥ रु ॥ ८३ ॥ सि ॥ ८४ ॥ दि ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ग ॥ ८७ ॥ व ॥ ८८ ॥ य ॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥ २४ ॥ वि ॥ ९१ ॥ क ॥ ९२ ॥ पु ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ रु ॥ ९५ ॥ व ॥ ९६ ॥ स ॥ ९७ ॥ वि ॥ ९८ ॥ स ॥ क ॥ ९९ ॥ स ॥ १०० ॥

वनध्वत्रयविष्णुयूष्मत्सजीवन्नाष्टकार्याविद्यो
नना॥२३॥सर्वगतसकमासक्तुयादविसृतिवद
ध॥जिगन्धियाजितक्राव्मजीवद्यावन्मदुध्वन
॥२४॥अष्टमासप्रयागदवकर्मनगसदा॥
निर्वाधयदमाप्राप्तिशान्तिष्मत्याप्रहावग॥२५॥

स्वयं सार्थमहादत्ताभाक्तमार्गप्रकाशिनशान
सायनयनन्दिशंलायनीयप्रयत्नग॥२६॥नव
मासप्रयागदध्वयावृत्तिरुल्लान्तकर्मः
प्रकृष्टीगालस्यावरुनल्लिय॥२७॥कामनूया
हवत्तिर्यविकामधित्तिवायन।ययप्रकृष्टनू

यत्कृत्तुं वरु वत्सदा ॥३०॥ महासिद्धिः प्रजायन्
उवनाधियति रु वरु । यथा विनिश्चि नृप के वि
ष्णु नृप मथापि वा ॥३१॥ नृप नृप यथा वापि का
मने यीरु वन नृप उमायति सभा रुत्वा जीवदं
दायुषं सदा ॥३२॥ दधमास युया (गन ६२६) नः

स्यापि नरु लं । लरु नयू वृ यूर्वा कं कि कि देवाः
धि कं रु नृ ॥३३॥ वलं स न गु धं न स्य असात्वा
दव दान वं ॥ अस स्रु गु धं स द्या न महा वल यना
क्रम ॥३४॥ अदृश्यः सर्वरु नाना मा वि न्यः सर्व
या गि ना । स्व द्या क न न सर्व य ना र्यं स व ला य

लं ॥ ३५ ॥ सु ल सु श्री रु व द रु ॥ क ल रु रु न सं
 य ॥ सर्व रु ल रु व रु स्य न व व द्दि रु य रु व न
 ॥ ३६ ॥ न रु ल न व रु रु द्वा ग दाम रु न रु कि रि
 ॥ न व म रु न ल कूटे ॥ सा ध क ॥ सा ध न गि व ॥
 ३७ ॥ न काल ॥ क म न ग स्य वि का म वि स मा रु व

न ॥ सदा गि व स्य रु क रु ल्ख क्का वा नी वि मा न ग ॥
 ॥ ३८ ॥ सर्व के सा ध य द न द सा य न म न रु मं ॥
 जू स्या क ल्य य रु व न ना स्ति रु न न सं ग य ॥ ३९ ॥
 व रु व य न न स्य व द व क म न ग स्य व ॥ आ ति ष्य
 स्या य रु व न सि दि न्ना न्य स्य क स्य वि न् ॥ ४० ॥

७
अ. हि गजा रु नि रसि दिय ॥ मा स प्र मा न ग्व
लि दय क. सि न न ग न क न राल स या य म
द ॥ सं ग्र ह णी या ध ल नि मं ३ न न यान न क ॥
सा या म न र ख या बी न ढा क या न क र पि का य
मि रु नि या व. लि थ ना ख वू ला व या य ॥ कि मि

या या नू ति व न य ॥ वि र्च न ढा क या सू थ या
न स स वू ला व या य ॥ स त्रि न क न मि रु व या
ना १ झी ल ना १ सा ख ल व न य ॥ दि न ३ ॥ या लि
ग ल स हि यि व या हि ग जा रु नि व वू ला व या य
॥ व म रु मि हि न या स र नू या नि व न य ॥ दि

नमः॥ इति दिग्गजालावा उवाच॥ ॥ यत्किंचिन्नानवमि
 श्रुतिधिसयुधेवनमस्तव॥ रुतियाकुक्षुवकादसिकुक्षु
 न्नायनवनमस्तव॥ चतुदसिद्वादसिनेदिरुवानमस्तव॥
 यत्किंचिन्नानवमि॥ यत्किंचिन्नानवमि॥ यत्किंचिन्नानवमि॥
 यत्किंचिन्नानवमि॥ यत्किंचिन्नानवमि॥ यत्किंचिन्नानवमि॥

पुतामपुता॥सिहताकिनितामपुता॥सत्रातामस
 तामपुता॥विवाताचवावपुता॥माकलताहसिता
 मपुता॥रुताताकुतामपुता॥धनमपुता॥॥००
 गितातासामसमायुता॥॥गुरु॥॥नमशी
 गतासायनमशाखयस्कूलगतंगजुन्दवदनलम्बाद

लंसन्दनदन्ताघाटविदालितात्रिवनितासिंदलसा
 साहाहनैशायत्यन्दमदगंतुनूयमखिलव्यालीलग
 लुक्कलवदिलेलसुतासुतगगलवगिसिद्विद
 कामदगगलगतया॥॥याकादन्दुरुखानलान
 ववनायात्वयवयासनायावीनावलदलुमन्दिग

का।
कालाया पृष्ठं लिनी। यावत्कायुतर्गकयल्लिहि
४ दवी सदा वन्दिता। सामावाउसनस्यतिरुगवती
निमेषजाया यला॥ सनसुनिया॥ ॥ नमस्तुन
नायसुसुमसुलि सुसुया दा कलिना नूवा रुवे। स
रुमनस्येयु नूवा यसा स्वम सुसुकाटियुगकालि

ननमः॥ नानायनया॥ ॥ कोमायादिनिवान्कवि
ध्वजुनकां यार्कसमस्तं लानानानूयनिनूययन
मायादिसिद्धियदं॥ ५४ खल्लकजलादियायरुन
नंसारिष्टल्लवामनि स्वयंजीकनूनाद्येष्वष्टमति
मानसुनयाउमी॥ मारुदवयो॥ ॥ नीलं जि

मृगवर्षसकलमिवमयंरुप्रवर्हिमनूय४वृद्धं
दावेगालंघालिगमिष्यमिष्यामृद्धकर्मसिदरुं।री
मासंरीमनूयंकिनिकिनिसुनवर्वंक्रियादंतिना
कींघालामालाकलालममरुनगरुयरुनवर्ननमा
मि॥।रीमसनया॥ ॥रुंनम४गीगमदेव्यनम४

॥वनारुउवाच॥धर्मरुद्धवदूयसवृक्षनोनिर्मि
त४यना।नद्धगीगतिविर्यातं४रुसूक्तार्गवमन्वने
॥॥कीर्येनामसरुद्धेसुमूयामूयानुविस्तने४॥
यानिनामानिमूयानिगानिवक्षाम्यनूक्रमात॥श
गीमरागिनधियूंत्थाऊंक्रतिसूननिम्नगम।विक्षू

यादाघर्षरुगाः ॥ ४ ॥ मित्रसिर्षकिगा ॥ ३ ॥ सुभन
भृंगसंश्रुष्टा हिमाचलरुगाग्रया । र्भखकी दन्दुधव
ला मलायाग कनामिनी ॥ ४ ॥ नदिन्यनितियधग्व
वृवितागनयिया । वर्मदवीरुगवति विथवावास

दायनी ॥ ५ ॥ क्रमाभाक्रियदाभाका पृथ्वदायतिका
मिवा मलानदीमगमरुवी शुक्रामकानवाहिनी ॥ ६ ॥
वक्ररुक्मापनिरुष्टा भोभ्यववाचध्वरुन । मुनिरी
४५ जिगादवीसर्वदवर्नमस्कता ॥ ७ ॥ मलायद्रुमयी
दवी मथानामुपकालिनी । सर्वगद्वलरुगगमिहि

४ कान विष्णु वन ४॥६॥ गंग दाल प्रिया णव गंग सा
गन सी ग म । नू दं का म मया त्या गं पूर्व म की त्वय रु
वा ॥ १॥ य ४ य प्य त्या न नू का य म ह्य न स्थ नि दु ग ति
४ य त्या य था व न वा ल्य को मा ल व द्धि क दृ गं ॥ १॥
न त्स र्व वि न र्य या नि मा य स्तु ल व न र्ज थ ॥ ॥ यी नि र्म

गि म हा ल क्ष्मी मायू ना ना ग्य स न्क ति ४॥ १॥ द द
ति गा क्ति वि द्धा त् स र्व ल व न मा व र्दी ॥ १॥ ति ग्री व ना
रु प ना ल्य ग्री गं ग द वा स्मा न्ति स मा य ४॥ ॥ लु न म
४ ग्री ल क्ष्मी द यै भा ल क्ष्मी की न स मृ द ना रु न न या यी
न ह्म वा म ग्व नी दा शि गी रु न स म स्तु द व र्नी ति तां त्रै

लाकदीयांकुली। श्रीषन्मन्द कलाकलद्विविहवाव
क्रन्दगंगधननीमेलोकाकृपुम्विनीमनसिजीवद
मूर्वीषुयियांशांशुह॥ ॥

रञ्जकनमागजाज्जायनमा॥ ॥ गुणमुकल्पविधि॥ गुणः
मुपजदोलनवानेस्यनकेनवच्छानलादिगलाके

गिलाकायलानयससु॥ व्याधिभाक, पुष्टिगजवाधनः
या॥ गुणमुजहिलाञ्जवैधेगोलाकृकृणीवृलाधनवासः
वागसशनसा, नूननगंन, विरुशनसा, जीतलनगंन, (गुण)
रुलसा, पालूसदाधनगंनशा॥ ॥ रुनउकल्पविधि
गवेषान, स्यधूडानके॥ सनयन, साखनजनके॥ रुमन

न शुं विडानक ॥ नि नि रन पिपलिडानक व सननक सि
डानक ॥ गुणमन गसु साहन डानक धनमसु लि स
हननक पुनसु सधया विहल ॥ ॥ २ ॥ ॥ अश्वग
धक पाषाणोद अश्वग धक मास गोद हामल गोद क १५५
माध क १ साख पु १ धल ॥ मल च विविल शुभ या ला या

नक न वां लाच गं गा खान सा पाश्व अहि सा अजमाद पृस्व
लामं जिल न वां गव खाल ॥ ॥ ३ ॥ ॥ वधा चो जिल ल पिपिला
मं मं स ड हाग ॥ शु हा

॥ अथ वन्द दिग्गा भेषत्रानि सिरुत्रानि धनूनास पूर्व
सवन्द वाद सयाष्टनानि कन्याना मकवत्रानि स

दक्षिणसुखवदवाहसय ॥ उत्तराग्री मिथूनवासि
क्रीरुवासिस, यक्षिमस, वदवाहसय ॥ कर्कटवा
सिः विरुवाग्री, मीनवासिस उत्तराग्री वदवाहस
या ॥ निचददिगा ॥ ॥

